कच्चे तेल का आयात

*385. **श्री कपिल सिब्बल**:
श्री राजीव रंजन सिंह "ललन": ††

क्या पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या पेट्रोलियम और पेट्रौलियम उत्पादों तथा संबंधित उत्पादों के आयात का वर्ष वार मूल्य कितना था, और

(ख) उक्त अवधि के दौरान कुल आयात मूल्य का यह मूल्य कितने प्रतिशत है?

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री (श्री राम नाईक): (क) और (ख) एक विवरण सदन के पटल पर रख दिया गया है।

विवरण

(क) और (ख) पिछले तीन वर्षों के दौरान कच्चे तेल और पेट्रोलियम उत्पादों के आयात का मूल्य और कूल आयात मूल्य के इस मूल्य का प्रतिशत निम्नलिखित तालिका में दिया गया है:

(करोड़ रुपये में)

वर्ष	कच्चे तेल और पेट्रोलियम उत्पादों के आयात मूल्य			कुल आयात मूल्य	(5) के प्रतिशत के रुप में (4)
	कच्चा तेल	उत्पाद	योग		
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
2000-01	65,932	12,093	78,025	230,873	33.8
2001-02	60,397	7,249	67,646	245,200	27.6
2002-03	76,195	8,206	84,401	296,597**	28.5**

††सभा में यह प्रश्न श्री राजीव रंजन सिंह "ललन" द्वारा पूछा गया

** अनन्तिम

Import of crude oil

†385. SHRI KAPIL SIBAL :
SHRI RAJIV RANJAN SINGH 'LALAN': ††

Will the Minister of PETROLEUM & NATURAL GAS be pleased to state :

(a) the value of import of all the petroleum and related products during the last three years, year-wise; and

(b) the percentage of this value out of the total import value during the said period?

THE MINISTER OF PETROLEUM AND NATURAL GAS (SHRI RAM NAIK): (a) and (b) A statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) and (b) The value of import of crude oil and petroleum products and the percentage of this value of the total import value during the last three years is given in the following table:

(Rs. in Crore)

Year	Value of Import of Crude Oil and Petroleum Products			Total Import Value	(4) as a % of (5)
	Crude Oil	Products	Total		
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
2000-01	65,932	12,093	78,025	230,873	33.8
2001-02	60,397	7,249	67,646	245,200	27.6
2002-03	76,195	8,206	84,401	296,597**	28.5**

श्री राजीव रंजन सिंह "ललन": सभापति महोदय, माननीय मंत्री महोदय ने उत्तर में बताया है जो हमने पूछा था, उसमें उन्होंने 2000-2001,2001-2002 और 2002-2003 में जो पैट्रोलियम प्रोडक्ट का आयात किया गया दर्शाया है उस पर उन्होंने सिर्फ प्रोडक्ट्स लिखा है। मैं माननीय मंत्री महोदय से यह जानना चाहूंगा कि प्रोडक्ट में कौन-कौन से प्रोडक्ट है और उनके आयात की आवश्यकता क्यों हुई?

†Original notice of the question was received in Hindi.
††The question was actually asked on the floor of the House by Shri Rajiv Ranjan Singh Lalan'.
**Provisional.

श्री राम नाईक: सभापति जी, ये जो प्रोडक्ट है मतलब पैट्रोलियम प्रोडक्ट है इनमें कभी डीजल आता है, कभी पैट्रोल आता है, कभी नाफ्था आता है, कभी लूबरिकेंट आता है तथा क्रूड ऑयल छोड़ करके बाकी-कभी कोरोसिन आता है। इसलिए अन्य पैट्रोलियम प्रोडक्ट इस प्रकार के है। इसकी आवश्यकता कभी एल.पी.जी. या कुछ चीजें ऐसे समय पर जैसे बीच में इराक के साथ लड़ाई के कारण कुछ चीजें समय पर मिलेंगी या नहीं मिलेंगी ऐसा संदेह पैदा हुआ था तब हुई और एल.पी. ज्यादा इंपोर्ट करना पड़ा। तो इस प्रकार से उसकी आवश्यकता होती है। मोटे तौर पर अब पैट्रोलियम प्रोडक्ट सका जो आयात है वह बहुत कम हो गया है क्योंकि हम रिफाइनिंग में अब सैल्फ सफिसिएंट हो गए हैं इसलिए उसकी मात्रा बहुत कम है और आपको भी दिखाई देगी कि 2001-2002 में प्रोडक्ट्स पहले 12 हजार में प्रोडक्ट्स पहले 12 हजार करोड़ रुपये के थे, 2002-2003 में अभी 8 हजार 200 करोड़ के हैं। तो यह धीरे-धीरे कम हो रहा है।

श्री राजीव रंजन सिंह "ललन": सभापति महोदय, माननीय मंत्री जी ने ठीक कहा कि हमारी जो रिफाइनरी है उसकी कैपेसिटी बढी है और हम समझते हैं कि रिफाइनरी की जो केपेसिटी है वह हमारे देश की जो आवश्यकता है उसकी पूरा करने के लिए पर्याप्त है और इसके अतिरिक्त और भी खोज की जा रही है और हमको प्राप्त हो रही है। मंत्री जी का ही बयान है-300 metric tonnes of oil reserves have been added during the last three years, तो इस तरह से जो हमारे पास और भी नई खोज उपलब्ध हो रही है ऐसी स्थिति में हम चाहेंगे कि हम पूरे तौर पर पैट्रोलियम प्रोडक्ट्स का आयात बंद करें, क्या ऐसा सरकार का विचार है और हम अपनी रिफाइनरी के जो प्रोडक्ट्स हैं उनसे ही देश की आवश्यकता मेंम खपत करें।

श्री राम नाईक: सभापति जी, या बात सही है कि हमें कुछ नए-नए रिसोर्स मिले हैं। लेकिन नया रिसोर्स जमीन के नीचे है यह मालूम होना और उसको खोजना और फिर उसके व्यापारिक उत्पादन करके बाहर निकालने में कम से कम 5 से 6 साल लगते हैं और इसलिए अभी जो हमको नए-नए रिसोर्स मिल रहे हैं इनके बाहर आने में व्यापारिक ढंग से समय लगेगा। दूसरे ऐसा है कि 1997-98 में अपनी रिफाइनिंग केपेसिटी 62.24 मिलियन मैट्रिक टन की थी वह अभी हमने 116.97 की है, मतलब लगभग दोगुनी हो गई है और इसलिए धीरे-धीरे जो बाकी के प्रोडक्ट्स है क्रूड ऑयाल छोड़ करके इनका आयात कम हो रहा है। लेकिन समय लगेगा। क्योंकि जमीन में से व्यापारिक उपयोग के लिए तेल और गैस निकालने के लिए कम से कम 5 से 6 साल लगते हैं।

श्री रमा शंकर कौशिक: श्रीमन, माननीय मंत्री जी ने जो प्राक्कलन दिया है, हिसाब दिया है उसमें 2001-2002 में 67646 और 2002-2003 में 84401 करोड़ का आयात किया गया। तेल उत्पाद या कच्चे तेल में 17 हजार करोड़ रुपए की बढ़तोत्तरी फौरन हुई है। तो मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि इन उत्पादों का अधिक मात्रा में आयात किया गया या केवल कीमत बढने का

ही परिणाम था? किस के परिणामस्वरूप 17 हजार करोड़ रुपए की खरीद ज्यादा हो पाई- मेरा "ए" पोइंट है? मेरा "बी" पोइंट है कि कुल आयात का हमारा जितना खर्च होता है उसमें से एक तिहाई केवल तेल के ऊपर खर्च हो रहा है। क्या माननीय मंत्री जी इस पर विचार करेंगे कि हमारे तेल के आयात का खर्चा कम से कम हो पाए?

श्री राम नाईक: सभापति जी, जब तक तेल और गैस की आवश्यकता है तब तक हमको आयात करना पड़ेगा क्योंकि देश का उद्योग, व्यापार उससे चलता है। घर-घर में पेट्रोलियम प्रोडक्ट्स, मिट्टी का तेल, एलपीजी लगता है। इसलिए इसकी आवश्यकता है। आवश्यकता के अनुरूप, अगर इसमें कमी आई तो फिर उत्पादन में कमी आयेगी और यह उचित नहीं होगा। जहां तक कीमतों का सवाल है। यह स्वाभाविक है कि हर साल हमारा कंजम्पशन बढ़ रहा है, लेकिन कभी-कभी तेल की कीमतें जमीन से आसमान तक जाती है। जैसे, पिछले साल के प्रारंभ में 20 डालर प्रति बैरल था और बीच में बढ़ते-बढ़ते 34-35 डालर प्रति बैरल तक गया था और अभी इस समय पर 29-30 डालर प्रति बैरल है। इसलिए इसमें दाम का भी कारण है। मैं जानकारी के लिए संक्षेप में बता सकता हूं कि 1998-99 में और अभी तक हमारा कंजम्पशन 40 हजार मिलियन मीट्रिक टन से 82 हजार मिलियन मीट्रिक टन तक बढ़ा है, करीब सौ प्रतिशत बढ़ा है। लेकिन उसमें कीमतें तीन गुणा बढ़ी है। तेल की कीमत अंतराष्ट्रीय बाजार में बहुत चढ़ती है और उसके कारण यह फर्क होता है।

श्री रमा शंकर कौशिक: सर, मैने 2001,2002 और 2003 के बारे में पूछा है, 1998 से लेकर अब तक का नहीं पूछा है। वर्ष 2001,2002 तथा 2003 में 17 हजार करोड़ रुपये का फर्क है इसलिए मैंने यह पूछा है कि यह मात्रा भेद के कारण है या क्रूड आयल की कीमतें बढ़ गईं, उसके कारण है या दोनों का परिणाम है? मंत्री जी, आप इसके बारे में साफ बताइये।

श्री राम नाईक: सभापति महोदय, मुझे संक्षेप में कहना है कि यह दोनों का संयुक्त परिणाम है। लेकिन यह बात सही है कि हमारा क्रूड आयल का इम्पोर्ट बढ़ रहा है और कीमतें भी बढ़ रही हैं। उसके कारण यह फर्क हो रहा है।

SHRI S.P.M. SYED KHAN: Sir, I would like to know from the hon. Minister how far the efforts made by the ONGC and that of the private sector have been successful in encouraging oil exploration in the country. How much indigenous crude oil is expected to be produced during the next five years? What would be the ratio between the imports and the indigenous production by the year 2010?

श्री राम नाईक: सर, मैंने कहा है कि नये-नये भंडारों की खोज लग गई है। लेकिन वह बाहर आने में समय लगेगा और तब तक हम अलग-अलग प्रकार से देश के इम्पोर्ट्स में सहायता हो,

इसलिए जैसे विदेश में जाकर हमने सूडान में आयल इक्विटी फील्ड जहां पर तेल का भंडार है, वहां पर अपनी इक्विटी ली है या भारत में भी इम्पोर्ट कम हो इसके लिए हमने एथेनॉल का पांच परसेंट उपयोग शुरू किया है। ये सारे प्रयास चल रहे हैं जिसके कारण हमारे आयात की जितनी मात्रा कम हो सकती है, उतनी कम हो जायेगी।

*386. [The questioner (Shri Abani Roy) was absent. For answer *vide* page 32 intra.]

*387. [The questioner Shrimati Saraj Dubey, Shrimati Sarla Maheshwari were absent. For answer *vide* page 33 *infra.]*

Allocation of gas to power projects

*388. SHRI BACHANI LEKHRAJ:

DR. A.K. PATEL:††

Will the Minister of PETROLEUM & NATURAL GAS be pleased to state:

(a) the demand for allocation of gas to power projects at present;

(b) whether Government are considering the demand;

(c) if not, the reasons therefor; and

(d) by when Government now propose to firm up the allocation of gas for Pipavav Project when the problems between the British Gas, Reliance, and ONGC Consortium have been sorted out?

THE MINISTER OF PETROLEUM AND NATURAL GAS (SHRI RAM NAIK): (a) to (d) A statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) to (c) As per the Indian Hydrocarbon Vision-2025 the demand of natural gas for power sector is estimated to be 119 Million Standard Cubic Meters Per Day (MMSCMD) by the year 2006-07. In 2002-03, as against the allocation of 52.4 MMSCMD of gas to Power Sector Projects, the average gas supply was around 27.2 MMSCMD. Currently, as against the total allocation of around 120 MMSCMD of natural gas, the supplies have been only around 65 MMSCMD. Therefore, it is not possible to consider

†† The question was actually asked on the floor of the House by Dr. A. K. Patel.